By :- Suwita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

इतिवृत्त क्या है? (What is chronical?)

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में उल्लेख किया है कि इतिहास के अन्तर्गत पुराण, इतिवृत्त, आख्यान एवं अर्थशास्त्र सभी आते हैं। गिरिजाशंकर प्रसाद महोदय ने इतिवृत्त उस जीवन चरित अथवा वंश चरित को कहा है जिसमें लेखक राजकीय प्रलेखों, प्रशस्तियों के आधार पर सत्य के अधिक निकट रहकर इतिहास लिखने का प्रयास करता है। इतिवृत्त में कल्पना एवं अलंकार प्रदर्शन कम-से-कम रहता है। इन्होंने बाणभट्ट के हर्षचरित को एवं कल्हण की राजतरंगिणी को इनके विशिष्ट ऐतिहासिक स्वरूप के कारण इतिवृत्त के अन्तर्गत रखा गया है।

परिचय :- Introduction

आज से लगभग 5000 वर्ष पहले सिन्धु नदी के तट पर स्थित सिन्धु घाटी सभ्यता विश्व की प्रारम्भिक चार प्रमुख सभ्यताओं में से एक थी। यह एक नगरीय सभ्यता थी। चूँकि पुरातत्वविदों द्वारा सर्वप्रथम हड़प्पा नगर की खोज की गई थी इसीलिये इसे हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है। हड़प्पा पंजाब के मांटगोमरी जिले में था। हड़प्पा के पश्चात पुरातत्वविदों ने इस सभ्यता के अन्य नगरों मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ो, लोथल, कालीबंगान, रंगपुर, रोपड़, आलमगीरपुर आदि अनेकानेक नगरों की खोज की। यह पूरी सभ्यता एक त्रिभुजाकार क्षेत्र में फैली हुई थी। भारतीय सभ्यता के ये सभी प्रारम्भिक नगर थे। इन सभी नगरों का पुरातत्वविदों ने जो उत्खनन किया, उससे इनकी अपनी कहानी लिखी गई। इन प्रारम्भिक नगरों के

मुस्लिम लीग में आया उस समय तक किसी मुसलमान ने पाकिस्तान की कल्पना भी नहीं की थी पर 1940 में मुस्लिम लीग में पाकिस्तान की मांग ... और ... के लिए जिन्ना जो कट्टर हठधर्मी और जिद्दी ... पाकिस्तान की माँग पर अड़े रहनेवाला व्यक्ति था, ने उनको हर ऐसी योजना को अस्वीकृत कर दिया जिसमें पाकिस्तान का उल्लेख नहीं था।

3. काँग्रेस की तुष्टिकरण की नीति :- भारत के विभाजन के लिए स्वयं काँग्रेस भी कम उत्तरदायी नहीं था। काँग्रेस की नीतियाँ सदैव मुस्लिम लीग को संतुष्ट करने में लगी रही। गाँधी ने तो मुस्लिम लीग और जिन्ना के समक्ष ... रखे थे। काँग्रेस ने मुस्लिम लीग और जिन्ना को अनुचित और आवश्यकता से अधिक महत्त्व देकर उसे संतुष्ट करने का प्रयास किया।

4. ब्रिटिश सरकार की फूट नीति :- भारत के विभाजन के लिए ब्रिटिश सरकार भी पूर्णतः दोषी थी। जिन्ना और मुस्लिम लीग को इतना ... अधिक महत्त्व देना ब्रिटिश नीति का एक चाल थी। अँग्रेज जानते थे कि जब तक हिन्दू और मुसलमानों में फूट डाले रखेंगे तब तक देश में उनके शासन को कोई खतरा नहीं है। अँग्रेजों ने फूट डालो और शासन करो की नीति साम्प्रदायिक चुनाव पद्धति और अल्पसंख्यकों को प्रतिनिधित्व देने की नीतियाँ अपना भारत के विभिन्न सम्प्रदायों में फूट डालने का सफल प्रयास किया।